साहित्यिक परिचय

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म सन 1907 ई० में बलिया जिले के 'दुबे का छपरा' नामक गांव में हुआ था| इनके पिता का नाम अनमोल द्विवेदी था| इनकी प्रतिभा का विशेष विकास विश्वविख्यात संस्था शांतिनिकेतन में हुआ । वहां यह 11 वर्ष तक हिंदी भवन के निदेशक के रूप में कार्य करते रहे । सन 1949 ईस्वी में लखनऊ विश्वविद्यालय ने इन्हें 'डी० लिट०' की उपाधि से तथा सन् 1957 ई० में भारत सरकार ने 'पद्म भूषण' की उपाधि से विभूषित किया ।

इन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय और पंजाब विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के अध्यक्ष पद पर कार्य किया तथा उत्तर प्रदेश सरकार की 'हिंदी ग्रंथ अकादमी' के अध्यक्ष रहे । तत्पश्चात यह हिंदी 'साहित्य सम्मेलन प्रयाग' के सभापति रहे ।

हजारी प्रसाद द्विवेदी हिंदी साहित्य के प्रख्यात निबंधकार, इतिहास लेखक, अन्वेषक, आलोचक , संपादक तथा उपन्यासकार के अतिरिक्त कुशल वक्ता और सफल अध्यापक भी थे । उन्होंने विश्व भारती और अभिनव भारतीय ग्रंथ माला का संपादन किया । उन्होंने विलुप्तप्राय जैन साहित्य को प्रकाश में लाकर अपनी गहन शोध दृष्टि का परिचय दिया । दिवेदी जी की

साहित्यिक सेवा को डी० लिट०, पद्मभूषण और मंगला प्रसाद पारितोषिक से सम्मानित किया गया है।

रचनाएं

द्विवेदी जी की प्रमुख रचनाएं इस प्रकार हैं -

• निबंध संग्रह -अशोक के फूल, कुटज, विचार प्रवाह, विचार और वितर्क, आलोक पर्व, कल्प लता

• आलोचना साहित्य- सूरदास, कालिदास की लालित्य योजना, कबीर, साहित्य सहचर, साहित्य का मर्म

• इतिहास - हिंदी साहित्य की भूमिका, हिंदी साहित्य का आदिकाल, हिंदी साहित्य.

• उपन्यास - बाणभट्ट की आत्मकथा, पुनर्नवा और अनामदास का पोथा

• संपादन - नाथ सिद्धों की बानिया संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो, संदेश रासक.